मार्च २०१६

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

असल बुद्धिमान

असल बुद्धिमान

संपादकीय

बालमित्रों,

आप में से खुद को बुद्धु मानने के लिए कौन तैयार है?

क्या कहते हो? कोई नहीं?

इसका मतलब कि सभी खुद को बुद्धिमान समझते हैं।

ठीक है न?

ठीक है, मैंने तो मान लिया लेकिन मुझे लगता है मैं कुछ कॉमेन्ट करूँ उसके बजाय आप खुद ही अपने आप को जाँचकर देख लीजिए।

कैसे?

तो चलो, इस अंक में पढ़ते हैं कि परम पूज्य दादाश्री असल बुद्धिमान किसे कहते हैं? उनके लक्षण कैसे होते हैं?

और हाँ, पढ़ने के बाद ईमानदारी से अपने आपको जाँचना मत भूलना और जैसा दादाश्री कहते हैं वैसा बनने का निश्चय करना भी मत भूलना।

डिम्पल मेहता

Happy Holi

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ३ अंक : १२
अखंड क्रमांक : ३६
मार्च २०१६

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : असल बुद्धिमान किसे कहते हैं?

दादाश्री : जो अपने घर में या चाहे कहीं भी हो व्यवहार इस तरह करता है कि कम से कम टकराव हो, किसी भी प्रकार के व्यवहार से किसी को दुःख न हो और सामनेवाले को हेल्प मिले। उसे असल बुद्धिमान कहते हैं।

बुद्धिमान तो उसे कहा जाता है कि जो इस तरह से अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करता हो कि किसी भी इंसान को उससे डर नहीं लगे। और जिससे कोई डरता हो, वहाँ कुबुद्धि है। इससे भयंकर पाप बंध जाते हैं।

सुबह के समय चाय देर से मिली तो शोर क्यों मचाते हो? चाय जैसी चीज़ के लिए अपसेट हो जाते हो और कषाय कर देते हो और खुद को सिर्फ मानते ही हो कि मैं बुद्धिमान हूँ। यह कितनी बड़ी मूर्खता कहलाती है। यह तो पुण्य के अनुसार सत्ता मिलती है और वह मान बैठता है कि मैं बुद्धिमान हूँ। चार आने की चाय के लिए शोर मचाकर पचास हज़ार का झगड़ा कर लेता है और घर में बेचारे सभी लोगों को डरा देता है! तो क्या वह असल बुद्धिमान कहलाएगा? कैसे कहलाएगा?

अगर अपनी सत्ता के आधार पर औरों को दुःख दें, डराएँ-धमकाएँ, डाँटें तो पता है इसका फल क्या आता है? ज़बरदस्त पाप बंधता है। यह पता नहीं होने की वजह से आदमी पाप करता ही रहता है।

खोटे सिक्के
एक गाँव में एक दरज़ी रहता था। उसका नाम बंसी था। वह बहुत ही सरल स्वभाव का भद्र पुरुष था।
उसी गाँव में एक मारवाड़ी सेठ रहता था। वह ठगगिरी में उस्ताद था।
एक दिन बंसी की दुकान में,
लो सेठ ये दो जोड़ी। बाकी के दो दिन बाद दूँगा।
जेब में हाथ डालकर सेठ ने थोड़े पैसे निकाले।
ये लो तुम्हारे पैसे।

मैंने बंसी जैसा मूर्ख पूरे गाँव में नहीं देखा। इतने समय से मैं इसे खोटे सिक्के दे रहा हूँ लेकिन इस बेवकूफ को पता ही नहीं चलता।
सही कह रहे हो सेठ। लेकिन इसकी एक खासियत माननी पड़ेगी। मैंने कभी इसे किसी के साथ झगड़ा करते हुए नहीं देखा!
क्या इसे खासियत कहेंगे? इसे तो मूर्खता कहेंगे। बोलना आता हो तो झगड़ा करे न।
दो दिन बाद अचानक बंसी का दोस्त उसकी दुकान पर आ गया।
अरे शंभु तू? आओ, भाई आओ। कब आए शहर से?
आज सुबह ही आया।
बंसी और शंभु की बातचीत चल रही थी, इतने में नन्हा भोलू बंसी की दुकान पर दौड़ता हुआ आया।
बंसी चाचा, चाची घर बुला रहीं हैं।
अच्छा,ठीक है।
बंसी, भाभी को कुछ काम होगा। तुम जाकर आओ। मैं दुकान का ध्यान रखता हूँ। तुम्हारे वापस आने पर साथ में बैठकर गरम-गरम चाय पीएँगे और गप्पें मारेंगे।

ठीक है भाई। में यों गया और यों आया। मेरी गैरहाज़री में कोई मारवाड़ी सेठ आएँ, तो उन्हें ये कपड़े की पोटली देकर, उनसे पैसे ले लेना।
बंसी को गए थोड़ी ही देर हुई थी, कि सेठ दुकान पर आ गया।
कहाँ गया बंसी? मेरे कपड़े तैयार हैं या नहीं?
शंभु ने, सेठ को पोटली दे दी।
ये लो पैसे, बंसी को दे देना।
अरे सेठ, रुको। इन सिक्कों में इतने खोटे हैं। ये नहीं चलेंगे। दूसरे दो।
तुझे क्या? ले-ले न चुपचाप। बंसी हमेशा कुछ भी बोले बिना ले लेता है।
सेठ तुम अपने आप को सेर समझते हो तो मैं भी सवासेर हूँ। बुद्धि के खेल खेलकर दूसरों को धोखा देते हो? यह खेल यहाँ नहीं चलेगा।
अरे तू कौन होता है मेरे साथ इस तरह बात करनेवाला? नहीं चाहिए तेरे कपड़े। ऐसा कहकर, सेठ गुस्सा होकर बाहर चला गया।

दूर से बंसी ने सेठ को दुकान से बाहर निकलते हुए देखा।
शंभु, मैंने सेठ को खाली हाथ जाते हुए देखा। वे अपने कपड़े लिए बिना क्यों चले गए?
बंसी, सेठ मुझे खोटे सिक्के दे रहा था। इतने दिनों से यह दगाबाज़ सेठ तुझे ठग रहा था, इसलिए मैंने उन्हें खाली हाथ घर भेज़ दिया।
अरे शंभु, उनके वो खोटे सिक्के ले लेने थे। मैं तुझ से कहना भूल गया।
क्या! तुझे पता है कि यह सेठ खोटे सिक्के देता है? फिर भी तू उनसे ले लेता है। क्या करता है तू उन सिक्कों का?
मैं वो सिक्के ज़मीन में गाड़ देता हूँ। यदि वे सिक्के चलते रहें तो पता नहीं कितने लोगों को ठगें और अच्छे लोगों की भी नीयत बिगड़े। इसलिए ऐसे सिक्कों को गाड़ दें तो अपना बिगड़-बिगड़ के कितना बिगड़ेगा?
वाह! दोस्त वाह! तेरी समझदारी तो धन्य है। मारवाड़ी तुझे ठगकर अपने आपको बुद्धिमान समझता होगा, लेकिन आज मैंने मान लिया कि असल बुद्धिमान तो तू ही है।

चीज़ से
ज्यादा इंसान
की कीमत है।

यह नई ही

जिनके घर में मतभेद नहीं होते, झगड़े नहीं होते, उन्हें ही बुद्धिमान कहा जाता है। जैसे किसी दिन कढ़ी में नमक ज्यादा हो गया हो और बाकी सब खाना बहुत अच्छा बना हो फिर भी कढ़ी के लिए शोर मचाए बिना नहीं रहे, उसे बुद्धिमान कैसे कह सकते हैं!

जिनमें बुद्धि नहीं है, आदिवासी हैं उनमें मतभेद नहीं होते। क्योंकि उनमें तो बुद्धि नहीं है। यह तो, बुद्धि नहीं है और खुद को बुद्धिमान मान बैठे हैं, उनमें मतभेद होते हैं।

तो बात !

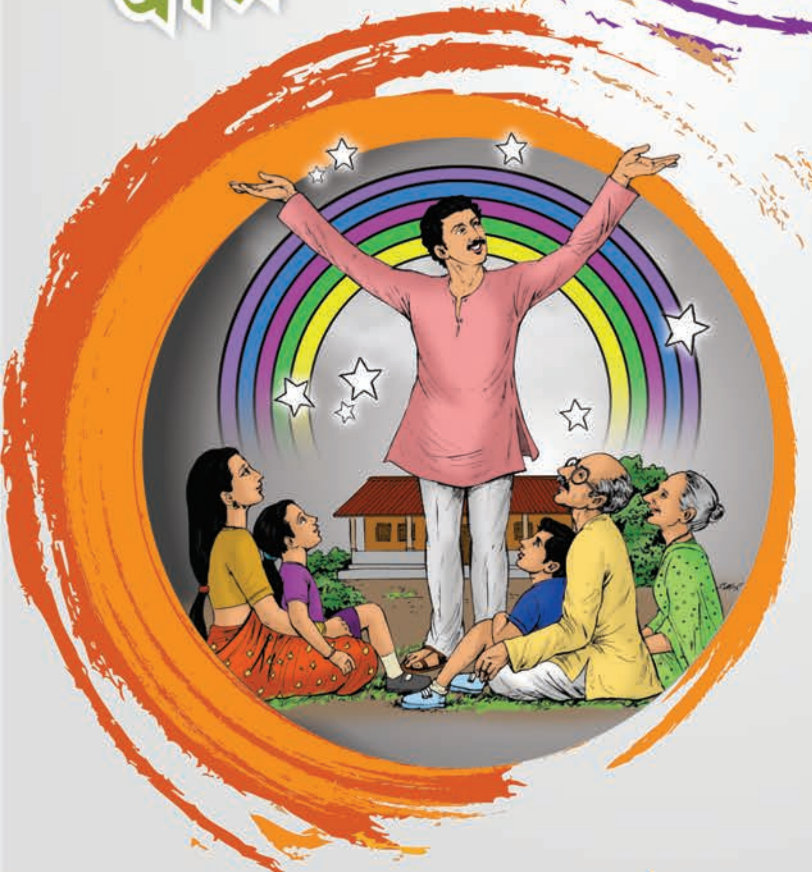

घर में और बाहर सभी को सुख मिले ऐसी तरकीब ढूँढ निकाले उसे बुद्धिमान कहा जाता है। घर में जो आनंद कराता हो उसे बुद्धिमान कहेंगे या फिर जो मुँह फुलाकर घूमता हो उसे कहेंगे?

बड़ा कौन?

शहनशाह अकबर के जन्म से पहले, अकबर के पिता जी राजा हुमायुँ को, पर्शिया के बादशाह से बहुत मदद मिली थी।

सालों बाद भी पर्शिया के बादशाह का बेटा शाह अब्बास, पत्रों के द्वारा अकबर को यह बात याद करवाता रहता था कि अकबर की कीर्ति और प्रसिद्धि का मुख्य श्रेय उनके उदार पिता पर्शिया के बादशाह को ही जाता है। इस बात से अकबर को बहुत अकुलाहट होती थी।

एक बार, शाह अब्बास को हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करके, अकबर का पूरा साम्राज्य ले लेने की इच्छा हुई। चढ़ाई करने से पहले हिन्दुस्तान के बारे में जानना भी ज़रूरी था। शाह अब्बास ने अकबर से अपने किसी दूत को पर्शिया भेजने के लिए संदेश भेजा।

बीरबल, अकबर के सब से प्रिय और बुद्धिमान मंत्री थे। पर्शिया के बादशाह के लिए तरह-तरह की भेंट-सौगातें देकर बीरबल को रवाना किया गया।

शाह अब्बास के राज्य में बीरबल का बहुत ही ठाठ-बाठ और वैभव से स्वागत किया गया।

जैसे ही बीरबल ने राज दरबार में प्रवेश किया, वहाँ उन्होंने एक अजीब सा दृश्य देखा। पाँच सिंहासनों पर पाँच बादशाह विराजमान थे। अब उनमें से असली बादशाह कौन है?

"बीरबल, आपने
हमें कभी देखा नहीं।
फिर भी आपने हमें किस
तरह पहचान लिया?"

"यह मेरी परीक्षा है। मुझे जल्दी ही तय करना पड़ेगा," बीरबल ने सोचा।

थोड़ी देर के लिए बीरबल ने पाँचों सिंहासन पर नज़र की और फिर हल्की मुस्कुराहट के साथ असली बादशाह को नमस्कार किया, और बोले, "राजा जी, हिन्दुस्तान के शहंशाह अकबर ने आपको बहुत सारी शुभकामनाएँ और ये भेंट-सौगातें भेजी हैं।"

शाह अब्बास ने बीरबल के चातुर्य के बहुत किस्से सुने थे, लेकिन आज आँखों से देखकर वे बहुत खुश हुए।

"बीरबल, आपने हमें कभी देखा नहीं। फिर भी आपने हमें किस तरह पहचान लिया?" शाह अब्बास ने अपना आश्चर्य व्यक्त किया!

"जहाँपनाह, थोड़ी देर के लिए तो मैं भी असमंजस में पड़ गया था, लेकिन जब मैंने देखा कि आपकी प्रतिक्रिया देखने के लिए अन्य सभी बादशाहों की नज़र आपकी तरफ थी और आपकी नज़र मुझ पर टिकी हुई थी, तब मैंने अनुमान लगा लिया कि आप ही असली बादशाह हैं।"

"वाह! बीरबल वाह! आप सचमुच बुद्धि के सागर हो! लेकिन अब मुझे एक बात बताओ। आपने कई राज्यों में सफर किया है। तो अन्य राज्यों की तुलना में आप मेरे बारे में क्या कहेंगे?"

"जहाँपनाह, आप तो पूनम का चाँद हैं अन्य सभी राजा तो आपके सामने जुगनू की तरह हैं।"

शाह अब्बास खुश हो गए, "ठीक है, अब मुझे यह बताओ कि शहनशाह अकबर की तुलना में आप मुझे क्या कहेंगे?"

बीरबल ने तुरंत जवाब दिया, "शहनशाह अकबर दूज का चाँद हैं और आप पूनम का चाँद।"

शाह अब्बास बीरबल के जवाब से बहुत खुश हो गए और बीरबल को बहुत सी भेंट-सौगातें देकर वापस भेज दिया और उस दिन से शाह अब्बास ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने का कभी सोचा ही नहीं।

लेकिन, जब बीरबल हिन्दुस्तान पहुँचे उससे पहले ही यह प्रशंसावाली बात

शहनशाह अकबर तक पहुँच गई थीं। जिसे सुनकर अकबर बहुत ही गुस्सा हो गए।

बीरबल ने जब अकबर के सामने शाह अब्बास के द्वारा भेजी हुई भेंट-सौगातें रखीं, तब अकबर ने सभी भेंट-सौगातें एक ओर रख दीं और बीरबल से कहा, "बीरबल, तुमने मेरे साथ धोखा किया है। शाह अब्बास के सामने मेरा अपमान किया है। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम शाह अब्बास को पूनम का चाँद कहो और मुझे सिर्फ दूज का चाँद?"

जहाँपनाह, पूनम का चंद्रमा तो दिनोंदिन छोटा होता जाता है, जबकि दूज के चाँद के पास पूर्णता तक चमकने का मौका होता है।"

बीरबल का जवाब सुनकर शहनशाह अकबर के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। बीरबल की तो खासियत ही थी कि चाहे जितनी भी खराब परिस्थिति हो वे उसका भी हल निकाल देते थे।

फिर थोड़े गंभीर स्वर में बीरबल ने कहा, "जहाँपनाह आपको तो पता है शाह अब्बास अपने अहंकार की वजह से हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करना चाहता था। यदि एक छोटी सी प्रशंसा से उसके अहंकार को संतोष मिलता हो और इतना बड़ा युद्ध टल जाता हो तो क्या यह करना योग्य नहीं होगा?"

"हाँ बीरबल, तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है। आज तुमने अपनी बुद्धि से, हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है। तुमने अपनी बुद्धि का उपयोग कभी भी खुद के स्वार्थ के लिए नहीं किया बल्कि हमेशा सभी के सुख के लिए और क्लेश टालने के लिए ही किया है।"

ऐसा कहकर, शहनशाह अकबर ने मंत्री बीरबल को पुरस्कार से सम्मानित किया।

जीवंत उदाहरण

हंगरी में रहनेवाले जोसफ कुदार बहुत बड़े वकील थे। 1956 में जब सोवियत ने हंगरी पर हमला किया, तब जोसफ को हर हाल में हंगरी से भागना पड़ा।

जोसफ जब अमरीका आए, तब उनके पास न तो पैसे थे ना ही नौकरी थी, लेकिन जोसफ बहुत ही पढ़े लिखे और बुद्धिमान थे। वे अंग्रेज़ी के अलावा, बहुत सी भाषाएँ बोल सकते थे और लिख भी सकते थे।

अमरीका आने के बाद, वहाँ के कायदे की जानकारी नहीं होने की वजह से वे कई महीनों तक वकालत की नौकरी करने में असफल रहे।

भाषाओं में बहुत कुशलता होने की वजह से उन्होंने एक इम्पॉर्ट-एक्सपॉर्ट कंपनी में निवेदन पत्र लिखा।

दो हफ्ते बाद, जोसफ को अपने निवेदन का जवाब मिला। लेकिन इतने कठोर और हठीले जवाब को पढ़ने के लिए जोसफ तैयार नहीं थे।

बहुत सी बातों के साथ जवाब में लिखा था कि "तुम्हें तो सही अंग्रेज़ी लिखनी भी नहीं आती। हमें ज़रूरत होगी फिर भी हम तुम्हें नौकरी पर नहीं रखेंगे।"

यह पढ़कर जोसफ को बहुत गुस्सा आया। उसने मन में सोचा, "यह व्यक्ति अपने आप को समझता क्या है? इसके पत्र में तो सौ गलतियाँ हैं, ऊपर से यह मेरी गलतियाँ निकाल रहा है?"

क्रोधित जोसफ ने एक गुस्से से भरा पत्र लिख दिया। थोड़ी देर के बाद, जोसफ ने खुद का लिखा हुआ पत्र पढ़ा। अचानक उनके मन में एक विचार कौंधा, जिससे उनका पूरा गुस्सा पिघल गया।

जोसफ को लगा, "नहीं, मैं ये पत्र पोस्ट नहीं करूँगा। हो सकता है कि वह व्यक्ति ठीक कह रहा हो, हो सकता है कि मुझे अपनी अंग्रेज़ी सुधारने के लिए और मेहनत करनी चाहिए। इस व्यक्ति ने तो मुझे मेरी गलती बताकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।"

जोसफ ने पत्र फाड़ दिया और दूसरा पत्र लिखा। इस पत्र में उसने पत्र लिखने में की गई गलतियों की माफी माँगी और ज्यादा मेहनत करने की सलाह के लिए आभार व्यक्त किया।

थोड़े ही दिनों में जोसफ को न्यूयॉर्क इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया। उस कंपनी में उसे नौकरी मिल गई।

सालों के बाद, जोसफ कुदार उसी कंपनी के वाइस प्रेसिडेन्ट बनें।

देखा मित्रों, असल बुद्धिमान उसे ही कहते हैं जो क्लेश होने की जगह क्लेश न होने दे। अपमान हुआ तब जोसफ थोड़े समय के लिए क्रोधित हो गए, लेकिन अंत में उन्होंने अपनी सरल बुद्धि से सीधा सोचा और क्लेश नहीं होने दिया।

नीचे के चित्र में से गोलाकार की चीज़ें ढूँढो।

चलो खेलें...

२ रास्ता ढूँढो...

३ दिमाग लगाओ...

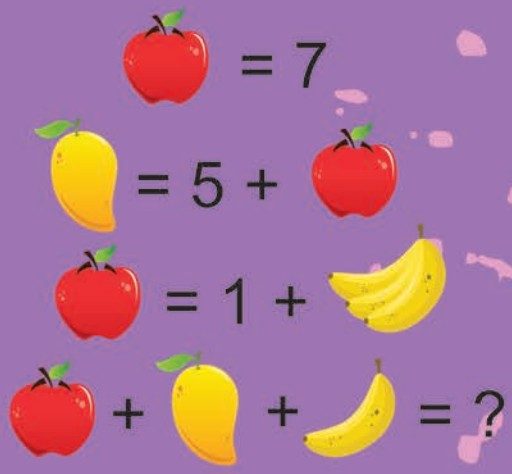

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

श्रीपुनगर में पद्म नामक सेठ का केसरी नामक एक पुत्र था। केसरी के बहुत सारे मित्र थे। लेकिन एक भी मित्र संस्कारी नहीं था। कोई आवारा, कोई लुच्चा, तो कोई बिल्कुल ही अधर्मी था। ऐसे दोस्तों की वजह से धर्म के संस्कार कैसे रह सकते हैं? खराब दोस्तों की वजह से उसके जन्म से मिले धार्मिक संस्कार लुप्त हो गए और वह दोस्तों की तरह बिगड़ गया। धीरे-धीरे उसे चोरी की आदत पड़ गई। वह छोटी-बड़ी चोरियाँ करने लगा।

केसरी के ऐसे दुष्कर्म की शिकायतें राजा के पास आने लगीं। राजा ने केसरी को पकड़ने का आदेश दिया। लेकिन नगर के प्रतिष्ठित सेठ की संतान होने की वजह से उसे समझा-बुझाकर छोड़ दिया।

फिर भी केसरी को इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने चोरी करना नहीं छोड़ा। उसकी चोरियाँ बढ़ती गईं। राज्य में उसकी वजह से परेशानियाँ बढ़ने लगीं। राजा ने उसके पिता से संपर्क किया और उनकी सहमति से केसरी को देश-निकाला दे दिया।

कहते हैं न कि मनुष्य को जब किसी पाप की आदत पड़ जाती है, तब उस पर दंड का कोई असर नहीं होता। केसरी को चोरी का व्यसन हो गया था। इसलिए देश-निकाला होने पर भी वह रास्ते में चलते हुए सिर्फ यही सोच रहा था कि आज रात को मैं किसके यहाँ चोरी करूँगा।

चलते-चलते वह नगर के बाहर एक सरोवर के पास पहुँचा। सरोवर के पास एक वृक्ष था। उस वृक्ष के ऊपर वह चढ़ गया और किसके घर चोरी हो सकती है उसका निरीक्षण करने लगा। उसकी नज़र चारों दिशा में घूम रही थी।

इतने में उसने एक सिद्ध पुरुष को आकाश से धरती पर उतरते हुए देखा। केसरी ने ध्यान से उनका निरीक्षण किया। सिद्ध पुरुष सरोवर के पास उतरकर अपनी पादुकाएँ उतारकर सरोवर में स्नान करने के लिए गए।

केसरी को मौका मिल गया। वह जल्दी से वृक्ष से उतरा और दौड़कर सिद्ध पुरुष की पादुकाएँ पहन लीं और आकाश में उड़ गया।

पादुकाएँ मिलते ही केसरी के आनंद की सीमा नहीं रही। जादुई पादुकाएँ मिलने की वजह से अब उसे पकड़े जाने का डर भी नहीं रहा। चोरी करना और उड़ जाना। बस, मज़ा ही मज़ा! केसरी ने अपने नगर में फिर से चोरियाँ करना शुरू कर दिया। उसने राजा के महल तक जाने की भी धृष्टता कर दी।

अब राजा की चिंता का पार नहीं था। उन्हें जादुई पादुकाओं की जानकारी मिली। उन्होंने चोर को पकड़ने के लिए कमर कसी लेकिन उसे पकड़ा कैसे जाए?

फिर भी तलवार लेकर चोर की खोज में निकल गए। खोज करते-करते वे एक दिन जंगल में पहुँचे। जंगल में उन्होंने

दिव्य पूजा किया हुआ चंडिका का एक मंडप देखा। राजा ने अंदाज़ा लगाया कि चोर यहाँ ज़रूर आना चाहिए इसलिए वह मंडप के प्रवेश द्वार के पीछे तलवार लेकर छुप गए।

सचमुच केसरी चोर उस मंडप में आया। पादुकाएँ बाहर उतारकर देवी को प्रणाम करके बोला, "हे देवी! यदि आज मुझे बहुत सा धन मिलेगा तो मैं आपकी विशेष पूजा करूँगा।" ऐसा कहकर जैसे ही वह बाहर निकला, तो वहाँ सामने राजा एक हाथ में पादुकाएँ और दूसरे हाथ में तलवार लेकर खड़े थे।

केसरी के लिए अब उड़ना मुश्किल था इसलिए वह पूरे वेग से भागा। राजा ने भी उसका भरपूर पीछा किया।

दौड़ते-दौड़ते केसरी एक रास्ते पर मुड़ गया, लेकिन राजा आगे ही आगे दौड़ते रहे। चोर हाथ से निकल गया। उन्होंने परेशानी में आसपास सभी जगह अपनी खोज जारी रखी।

केसरी दौड़ते-दौड़ते सोचने लगा कि आज तो मैं फँस गया। मेरा पाप फूट गया। अब कैसे बचूँ?

तभी उसने एक मुनि को देखा। मुनि को प्रणाम करके पूछा, "मुनिराज! मैंने भयंकर पाप किया है। असंख्य चोरियाँ की हैं। मेरे पापों को कैसे धोऊँ?"

मुनि ने उससे अपने पापों का प्रायश्चित करने ध्यान में बैठने के लिए कहा।

केसरी तुरंत ही ध्यान में बैठ गया और पूरी ज़िंदगी खुद के किए हुए पापों का सच्चे दिल से पश्चाताप करने लगा। प्रायश्चित करते-करते उसका हृदय पिघलने लगा, "सचमुच मुझे धिक्कार है। मैंने नास्तिक बुद्धि से कितने सारे पाप किए हैं।"

इस तरह केसरी शुभ ध्यान करने लगा और अंत में उसे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। देवताओं ने केवली का उत्सव मनाया। उन्होंने केसरी को रजोहरणादि उपकरण दिए।

इस तरफ राजा उसे ढूँढते-ढूँढते वहाँ आ पहुँचे। लेकिन उन्होंने देखा कि केसरी तो धर्म ध्यान में मग्न है। यह देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ और टकटकी लगाकर उसे देखने लगे।

यह देखकर ज्ञानी मुनिराज ने उनसे कहा, "राजन! तुम्हें ऐसा प्रश्न हो रहा है न कि एक चोर को केवलज्ञान कैसे हो गया? तो सुनो, इस केवलज्ञान की उपलब्धि उसके शुद्ध भाव से किए गए प्रायश्चित को आभारी है। जिसके फल स्वरूप केवलज्ञान हुआ है।"

मुनि का उपदेश सुनकर राजा ने केसरी को प्रणाम किया और उसके लिए किए गए खराब भावों के लिए प्रायश्चित किया। इसके साथ ही केसरी मुनि की मुक्ति हो गई।

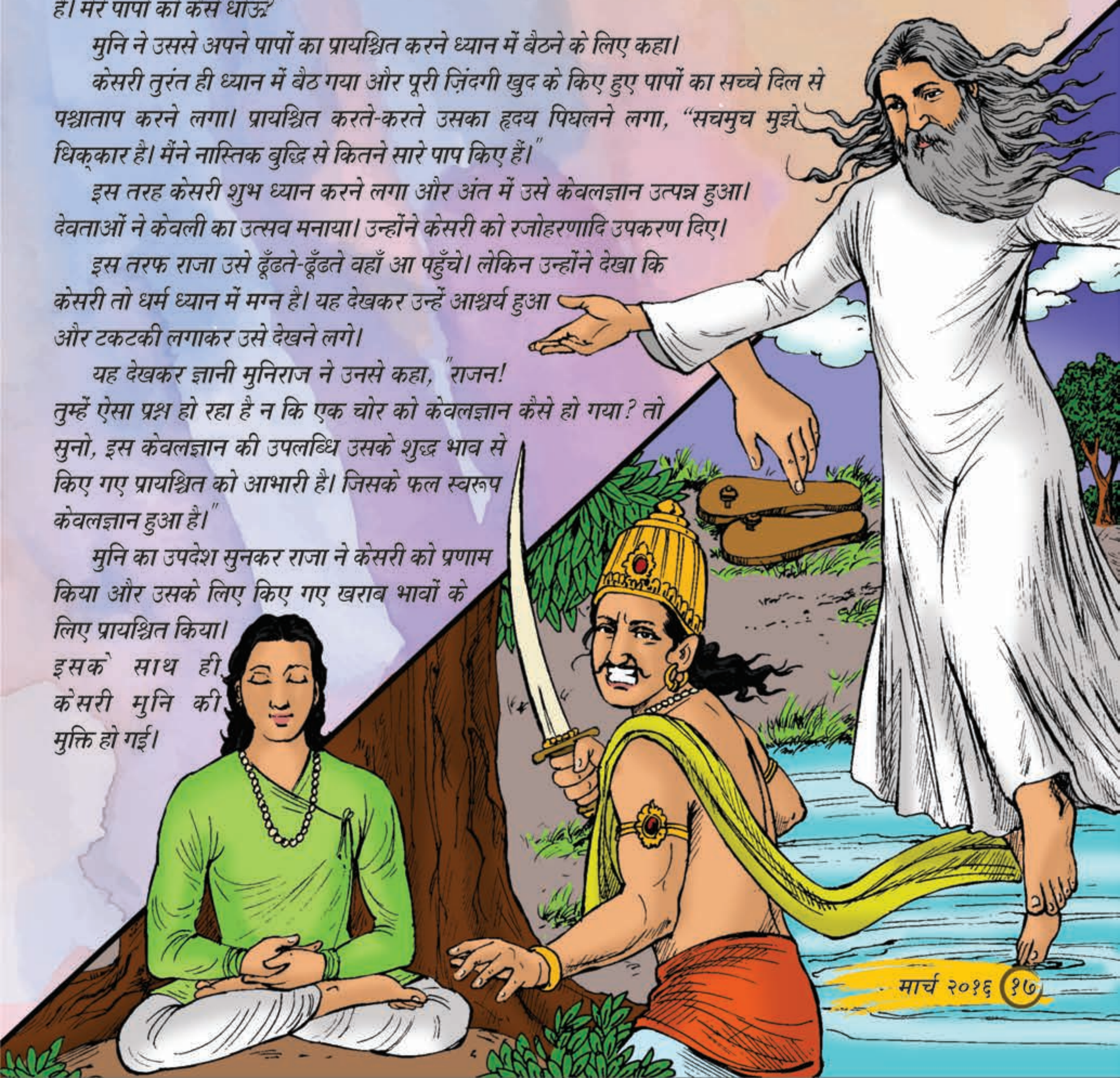

मीठी यादें

एक बार सेवा में एक बहन को कुछ प्रॉब्लेम आया। प्रॉब्लेम का कोई सॉल्युशन नहीं मिलने पर उन्होंने नीरू माँ से मिलकर सॉल्युशन लाने का तय किया। नीरू माँ से मिलने के लिए जब उन बहन ने टाइम माँगा, तब नीरू माँ ने उन बहन से किसी और भाई से मिलकर अपनी बात का सॉल्युशन लेने के लिए कहलवाया।

उन बहन ने नीरू माँ के कहे अनुसार किया। उस दिन शाम को नीरू माँ राम-झरोखा बैठे थे। तब उनकी नज़र उन बहन पर पड़ी। नीरू माँ ने इशारे से उसे अपने पास बुलाया। फिर नीरू माँ ने उन बहन से कहा, 'भाईयों ने मुझसे तुम्हारा प्रॉब्लेम कहा और उन्होंने तुम्हारे लिए एक सॉल्युशन दिया है। हमने तुमसे उन भाई के साथ बात करने के लिए इसलिए कहा था, जिससे तुम उनके संपर्क में आओ। तुम्हारा डिपार्टमेन्ट उन भाई के नीचे आता है। डिपार्टमेन्ट के सभी लोगों को तुम्हारी परिस्थिति का ख्याल आए और तुम भी सभी के संपर्क में रहो, इसलिए हमने तुमसे डायरेक्टली उन भाई के साथ बात करने के लिए कहा।'

'नीरू माँ क्यों नहीं मिले' यह प्रश्न उन बहन को ज़रा भी नहीं था। फिर भी नीरू माँ ने क्लियर किया और उनके मन का समाधान किया।

नीरू माँ का लघुत्तम भाव कितना ज़बरदस्त था! वे अपनी बात स्पष्ट करके हर एक का समाधान करते।

और अंत में...

बुद्धिमान इंसान
अपनी बुद्धि से
पैसेवाला बन
सकता है। लेकिन
पैसेवाला इंसान
अपने पैसों से
बुद्धिमान नहीं बन
सकता।

जोक्स

पिता : बेटा, बुद्धिमान लोग बेवकूफ की बातों का जवाब नहीं देते। सिर्फ हँस देते हैं।

बेटा : इसलिए तो पापा, परीक्षा में मैंने सवाल पढ़े और हँस के आ गया।

"अक्रम एक्सप्रेस" पत्रिका की माहिती - फॉर्म नं. ४ (रूल नं.८)
१. प्रकाशन स्थल : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१,जिला-गांधीनगर
२. प्रकाशन का समय : प्रतिमास
३. मुद्रक : अंबा ऑफसेट, राष्ट्रीयता : भारतीय,
पता - पार्श्वनाथ चेम्बर्स के बेसमेन्ट में, नई आर.बी.आई के पास, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-१४
४. प्रकाशक : महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय,
पता : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१, जिलाः गांधीनगर
५. संचालक : डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय, पताः ऊपर के अनुसार
६. मालिक का नाम : महाविदेह फाउन्डेशन, राष्ट्रीयता : भारतीय, पताः ऊपर के अनुसार
मैं डिम्पल महेता, ज़ाहिर करता हूँ कि उपर्युक्त माहिती मेरे जानने में और मान्यता अनुसार सही है।
दि. ८-३-२०१६, अहमदाबाद। महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

पज़ल के जवाब

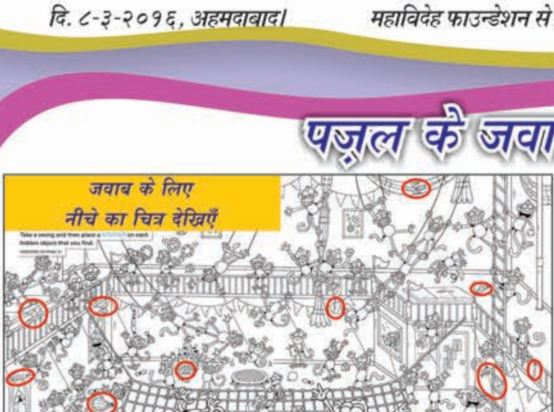

जवाब - २१

Akram Express

March 2016
Year : 3, Issue : 12
Conti. Issue No.: 36

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

गुरुकुल के बच्चों के साथ पूज्य श्री...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published